B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA
(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)
BA DEGREE-2
HISTORY (SUB./GEN.)
UNIT-5(B)
DEPARTMENT OF HISTORY
PANKAJ KR.MISHRA
DATE-23/09/2020

TOPIC- भारत छोड़ो आंदोलन(1942 ई.)

(QUIT INDIA MOVEMENT (1942 AD)

Part-4

Scanned with CamScanner

क्या आंदोलन स्वतः स्फूर्त था ?

i.> अपने पूर्ववर्ती आंदोलनों की तुलना में भारत छोड़ो आंदोलन अधिक स्वतः स्फूर्त था। वस्तुतः गाँधीवादी जन आंदोलन की पद्धति यह थी कि नेतृत्व कार्यक्रम की मोटी रूपरेखा बना देता था। उसका क्रियान्वयन स्थानीय नेता तथा जन साधारण के हाथ में छोड़ दिया जाता था।

ii.> इसमें संदेह नहीं कि 1942 ई० में यह रूपरेखा स्पष्ट नहीं की गयी थी क्योंकि नेतृत्व को आंदोलन छेड़ने का अवसर नहीं मिला, आंदोलन के अगले दिन सभी बड़े नेता गिरफ्तार कर लिए गए थे और फिर जनता ने अपने हाथ में आंदोलन को लेकर पहल की लेकिन जनता ने अपनी तरफ से जो पहल की उसकी स्वीकृति नेतृत्व अपनी तरफ से दे चुका था। 8 अगस्त 1942 ई० को कांग्रेस के द्वारा पारित प्रस्तावों में स्पष्ट रूप से कहा गया था कि एक ऐसा समय आ सकता है, जब निर्देश जारी करना संभव न हो सके, वा निर्देश लोगों तक पहुँच ही न सके या कांग्रेस कार्य समिति कोई कार्य कर ही न सके। अगर ऐसा होता है तो प्रत्येक स्त्री और पुरुष जो आंदोलन में भाग ले रहा है जारी किए गए निर्देश की चौहद्दी में अपने काम का खुद ही फैसला करना होगा। हर भारतीय को जो आजादी चाहता है और उसके लिए प्रयत्नशील है अपना मार्गदर्शक खुद बनना होगा। अतः स्पष्ट है कांग्रेस नेतृत्व ने जनता को स्वतः स्फूर्त होने का निर्देश दे रखा था।

iii.> दूसरी बात की आंदोलन का व्यापक प्रभाव उन क्षेत्रों (बंगाल, संयुक्त प्रांत, बिहार) में रहा जहाँ कांग्रेस संगठन ने जमकर कार्य किया और कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण शिविर लगाए थे।

iv.> इस तरह भारत छोड़ो आंदोलन को स्वतः स्फूर्त आंदोलन नहीं कहा जा सकता। इसमें कोई संदेह नहीं कि जनता की प्रतिक्रियायें स्वतः स्फूर्त थी किन्तु वह तभी हुई जब नेताओं और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। विचारधारा संगठन और राजनीति के स्तर पर कांग्रेस काफी लंबे समय से संघर्ष की तैयारी कर रही थी। पहले भी असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और व्यक्तिगत सत्याग्रह जैसे अनेक आंदोलन चलाए गए थे। जिनका उद्देश्य जन सामान्य को धीरे-धीरे एक बड़े संघर्ष के लिए तैयार करना था। इन वर्षों में भारत के लोगों ने राष्ट्रवादी विचारधारा और कांग्रेस समर्थित जन आंदोलन के सार को समझ लिया था और गाँधी सहित कांग्रेस ने भी इस बात को समझ लिया कि जनता अब ब्रिटिश राज की बुराई के खिलाफ अपने आप लड़ सकती है। इसी कारण कोई निर्देश या कार्यक्रम नहीं दिए गए।

Pankaj
23/09/2020

Scanned with CamScanner